**AMOGHVARTA**

**ISSN : 2583-3189**

# बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में जनसाँख्यिकीय क्षेत्र के आधार पर पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन

**ORIGINAL ARTICLE**

**Author**
**डॉ. राघवेन्द्र सिंह सिकरवार,**
सहायक प्राध्यापक
संत योगी मान सिंह शिक्षा महाविद्यालय,
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

## शोध सार

पर्यावरण हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। पर्यावरण की रक्षा करने में लापरवाही बरतने का अर्थ अपना विनाश करना है। हम अपने दैनिक जीवन में पर्यावरणीय संसाधनों का प्रयोग करते है। मानव की सभी क्रियाओं का पर्यावरण पर प्रभाव पड़ता है। विगत दो सदियों से जनसंख्या में हुई वृद्धि तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी में हुए तीव्र विकास से पर्यावरण पर पड़ने वाला प्रभाव कई गुना बढ गया है। यदि पर्यावरणीय समस्याओं को हल नहीं किया गया तो यह पृथ्वी भावी पीढ़ी के रहने योग्य नहीं रहेगी। इस सच्चाई से इन्कार नहीं किया जा सकता कि भविष्य को संभव बनाने के लिए पर्यावरण की रक्षा एवं बचाव अनिवार्य है। यद्यपि प्रकृति में सहन करने की अपार क्षमता है और यह स्वयं को पुनर्जीवित कर लेती है। परंतु फिर भी इसकी एक सीमा है विशेष रूप से जब बढ़ती जनसंख्या और प्रौद्योगिकी का दबाव निरंतर बढ़ रहा है। आज अक्षय विकास तथा परिवर्तनशील पर्यावरण के सुधार एवं संरक्षण की आवश्यकता है।

## मुख्य शब्द

पर्यावरण जागरूकता, जनसाँख्यिकीय क्षेत्र, बी.एड. प्रशिक्षणार्थी, आदिवासी बहुल।

## परिचय

पर्यावरण शब्द 'परि' और 'आवरण' के संयोग से बना है। 'परि' का आशय चारों ओर तथा 'आवरण' का आशय परिवेश है। पर्यावरण एक विशाल संप्रत्यय है। वह सब कुछ जो हमारे जीवन को प्रभावित करता है संपूर्णता में पर्यावरण ही है। मानव प्राणी के नाते बहुधा हम अपने चारों ओर की परिस्थितियों के मनुष्यों और अन्य प्राणियों पर प्रभाव के प्रति चिंतित होते हैं। आज समस्त विश्व में पर्यावरण के गुणात्मक ह्रास के प्रति चिंता व्याप्त है और पर्यावरण की विस्तृत क्षति को रोकने और उसकी गुणात्मक उन्नति के प्रयास किये जा रहे हैं। हम जिस पर्यावरण में रहते और कार्य करते हैं वह हमारे विचारों, भावनाओं और व्यवहार को प्रभावित करता है। मनुष्य और पर्यावरण का संबंध द्विपक्षीय है। मनोविज्ञान को यह क्षेत्र मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं और भौतिक पर्यावरण दोनों प्राकृतिक एवं मानवकृत के मध्य परस्परिक संबंधों के अध्ययन के लिए समर्पित है। पारस्परिक संबंध द्विमार्गी प्रक्रिया से कार्य करता है जिसमें पर्यावरण मानव व्यवहार पर प्रभाव डालता है और मनुष्य पर्यावरण को प्रभावित करता है।

विगत दो दशकों में पर्यावरण ने नीति निर्माताओं, वैज्ञानिकों और विश्व के अनेक देशों में आम आदमी का ध्यान आकर्षित किया है। वे अकाल, सूखा, ईंधन की कमी, जलाने की लकड़ी और चारा, वायु और जल प्रदूषण, रासायनिकों और विकिरणों की भयावह समस्या, प्राकृतिक संसाधनों, वन्य जीवन का लुप्त होना व वनस्पति तथा जीव जन्तुओं को खतरे जैसे मुद्दों के प्रति अधिक सतर्क होते जा रहे हैं। लोग आज वायु, जल, मृदा और पौधे जैसे प्राकृतिक पर्यावरणीय संसाधनों की वद्धि करने की आवश्यकता के प्रति सजग हैं तथा यह प्राकृतिक सम्पदा है जिस पर मनुष्य निर्भर करता है। पर्यावरणीय मुद्दे महत्वपूर्ण हैं क्योंकि उनके समाधन के बिना स्थिति बहुत भयावह होगी। यदि पर्यावरणीय समस्याओं को हल नहीं किया गया तो यह पृथ्वी भावी पीढ़ी के रहने योग्य नहीं रहेगी। आज जो बड़े–बड़े परिवर्तन हो रहे हैं सभी मानवीकृत हैं और यही परिवर्तन पर्यावरण के लिए खतरे की घण्टी है। वह चाहे प्रदूषण के रूप में हानि वाला परिवर्तन हो या ओजोन परत के रिक्त करने सम्बंधी, तब हमें और अधिक जागरुक होने की आवश्यकता है और हमें अपने दृष्टिकोण को इस तरह का बनाना होगा जिससे कि पर्यावरण के सन्तुलन को बनाये रखा जा सके।

जनसामान्य में भी जो पर्यावरण के प्रति जागरुकता आयी है वह तभी उपयोगी हो सकती है जब उसे प्रभावी कार्य रूप में परिणित किया जा सके। इस कार्य में पारिस्थितिकी का ज्ञान बहुत सहायक होता है। यह पर्यावरणीय समस्यायें बढ़ी हैं तो उनके साथ–साथ इस सम्बध में क्या किया जाना चाहिए। इस तरह की सोच के प्रति जागरुकता भी बढ़ी है। आज हमें अपनी अभिवृत्ति को इस तरह से विकसित करने की आवश्यकता है जिससे कि पर्यावरण की समस्याओं से निपटा जा सके।

## उद्देश्य

1. ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरुष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों, जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं एवं जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन करना।
2. ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों, जो सामान्य क्षेत्र की निवासी हैं एवं जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन करना।
3. ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों, जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं एवं जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन करना।

## परिकल्पनाएं

1. ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरुष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों, जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं एवं जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियो, जो सामान्य क्षेत्र की निवासी हैं एवं जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों, जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं एवं जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

## न्यादर्श तालिका

**तालिका क्रमांक 1**

| संख्या | सामान्य क्षेत्र से सम्बन्धित | आदिवासी बहुल क्षेत्र से सम्बन्धित | महायोग |
|---|---|---|---|
| पुरुष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की संख्या | 50 | 50 | 100 |
| महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियो की संख्या | 50 | 50 | 100 |

*(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)*

## परिसीमन

1. शोध अध्ययन को ग्वालियर जिले तक सीमित रखा गया है।
2. शोध अध्ययन को ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत बी.एड. प्रशिक्षणार्थीयों तक सीमित रखा गया है।
3. शोध अध्ययन को बी.एड. प्रशिक्षणार्थी जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं। 100 प्रशिक्षणार्थी (जिसमें 50 पुरुष प्रशिक्षणार्थी व 50 महिला प्रशिक्षणार्थी) एवं जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं 100 प्रशिक्षणार्थी (जिसमें 50 पुरुष प्रशिक्षणार्थी व 50 महिला प्रशिक्षणार्थी) हैं सम्मिलित किये गये हैं, तक सीमित रखा गया है।

## प्रयुक्त शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा डॉ. प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित पर्यावरणीय जागरूकता मापनी नामक परीक्षण का उपयोग किया गया है।

## प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु शोधार्थी ने मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, प्रामाणिक त्रुटि, क्रांतिक अनुपात, स्वतंत्रता अंश एवं सार्थकता स्तर का प्रयोग किया है।

## विश्लेषण एवं व्याख्या

**परिकल्पना–1:** ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविधालयों के पुरुष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों, जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं एवं जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**तालिका क्रमांक 2**

| क्षेत्र | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | $S.E_d$. | C.R. | विश्वास स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पुरुष प्रशिक्षणार्थी जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं | 50 | 17.17 | 6.60 | 0.63 | 3.19 | 0.05 | 1.98 |
| पुरुष प्रशिक्षणार्थी जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं | 50 | 19.18 | 6.00 | | | .01 | 2.62 |

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त पुरुष प्रशिक्षणार्थी, जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 17.17 एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थी जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 19.18 है। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 3.19 है जो 98 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 से अधिक है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि पुरुष प्रशिक्षणार्थी जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता, पुरुष प्रशिक्षणार्थी जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता से उच्च है।

**परिकल्पना–2:** ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविधालयों की महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों, जो सामान्य क्षेत्र की निवासी हैं एवं जो आदिवासी बहुल क्षेत्र की निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक 3

| क्षेत्र | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | S.Ed. | C.R. | विश्वास स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला प्रशिक्षणार्थी जो सामान्य क्षेत्र की निवासी हैं | 50 | 17.60 | 6.65 | 0.63 | 3.49 | 0.05 | 1.98 |
| महिला प्रशिक्षणार्थी जो आदिवासी बहुल क्षेत्र की निवासी हैं | 50 | 19.80 | 6.00 | | | .01 | 2.62 |

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 3 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त महिला प्रशिक्षणार्थी, जो सामान्य क्षेत्र की निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 17.60 एवं महिला प्रशिक्षणार्थी जो आदिवासी बहुल क्षेत्र की निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 19.80 है। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 3.49 है जो 98 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 से अधिक है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि महिला प्रशिक्षणार्थी जो आदिवासी बहुल क्षेत्र की निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता, महिला प्रशिक्षणार्थी जो सामान्य क्षेत्र की निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता से उच्च है।

**परिकल्पना–3:** ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविधालयों के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं एवं जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक 4

| क्षेत्र | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | S.Ed. | C.R. | विश्वास स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रशिक्षणार्थी जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं | 100 | 17.38 | 5.65 | 0.59 | 2.71 | 0.05 | 1.97 |
| प्रशिक्षणार्थी जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं | 100 | 18.85 | 6.20 | | | .01 | 2.60 |

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 4 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त प्रशिक्षणार्थी जो सामान्य क्षेत्र की निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 17.38 एवं प्रशिक्षणार्थी जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 18.85 है। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 2.71 है जो 198 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 से अधिक है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रशिक्षणार्थी जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता, प्रशिक्षणार्थी जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता से उच्च है।

## निष्कर्ष

प्रदत्तों के विश्लेषण एवं उनकी व्याख्या के उपरान्त यह जानने की स्वाभाविक इच्छा उत्पन्न होती है कि सम्बन्धित समस्या पर आधारित शोध कार्य की उपलब्धियाँ व निष्कर्ष क्या हैं ? शोध अध्ययन में प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार प्रस्तुत हैः–

**परिकल्पना 1:** ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविधालयों के पुरुष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों, जो सामान्य

क्षेत्र के निवासी हैं एवं जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध में तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त पुरुष प्रशिक्षणार्थी, जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 17.17 एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थी जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 19.18 है।

मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 3.19 है जो 98 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 से अधिक है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि पुरुष प्रशिक्षणार्थी जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता, पुरुष प्रशिक्षणार्थी जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता से उच्च है।

अतः कहा जा सकता है कि हमारी शून्य परिकल्पना असत्य सिद्ध हुई, अर्थात् ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविधालयों के बी.एड. पुरुष प्रशिक्षणार्थी जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थी जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अंतर है।

**परिकल्पना 2:** ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों जो सामान्य क्षेत्र की निवासी हैं एवं जो आदिवासी बहुल क्षेत्र की निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध में तालिका क्रमांक 3 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त महिला प्रशिक्षणार्थी, जो सामान्य क्षेत्र की निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 17.60 एवं महिला प्रशिक्षणार्थी जो आदिवासी बहुल क्षेत्र की निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 19.80 है।

मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 3.49 है जो 98 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर 2. 62 से अधिक है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि महिला प्रशिक्षणार्थी जो आदिवासी बहुल क्षेत्र की निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता, महिला प्रशिक्षणार्थी जो सामान्य क्षेत्र की निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता से उच्च है।

अतः कहा जा सकता है कि हमारी शून्य परिकल्पना असत्य सिद्ध हुई, अर्थात् ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविधालयों की बी.एड. महिला प्रशिक्षणार्थी जो आदिवासी बहुल क्षेत्र की निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता एवं महिला प्रशिक्षणार्थी जो सामान्य क्षेत्र की निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अंतर है।

**परिकल्पना 3:** ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं एवं जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक 4 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त प्रशिक्षणार्थी जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 17.38 एवं प्रशिक्षणार्थी जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 18.85 है।

मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 2.71 है जो 198 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर

2.60 से अधिक है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रशिक्षणार्थी जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता, प्रशिक्षणार्थी जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता से उच्च है।

अतः कहा जा सकता है कि हमारी शून्य परिकल्पना असत्य सिद्ध हुई, अर्थात् ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविधालयों के बी.एड. प्रशिक्षणार्थी जो आदिवासी बहुल क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता एवं प्रशिक्षणार्थी जो सामान्य क्षेत्र के निवासी हैं की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया है।

## सन्दर्भ सूची

1. कपिल एच.के. *''अनुसंधान विधियां''* एच.पी.भार्गव बुक हाउस भवन, कचहरी घाट, आगरा।
2. भार्गव, एम. *''आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण और मापन (हिंदी)''* एच.पी. भार्गव बुक हाउस आगरा, 2006।
3. गुप्ता आर.डी, सिंह के.वी. *''पर्यावरणीय अध्ययन''* वितरक आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. गोयल, एम.के. *''पर्यावरण शिक्षा''* विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 2005।
5. उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च –ग्रंथालयः खंड 3, अंक–7: सितंबर, 2015।
6. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता– एक अध्ययन, अनुसंधान की समीक्षा, खंड –4, अंक–7, अप्रैल–2015।

## Websites

1. www.google.com
2. www.wikipedia.org

––==00==––